श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड़, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर ______ ९   शहर फरवरी - २०२६

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	जंगल
(२)	स्वकाय
(३)	उपादेय
(४)	प्राथमिक
(५)	मोक्ष
(६)	आधी - आधी
(७)	धनदेव
(८)	मित
(९)	तमाचा
(१०)	सर्व / सभी
(११)	युगलिक
(१२)	क्षायिक
(१३)	पृथकत्व
(१४)	संपत्ति
(१५)	नाग-कुमार
(१६)	अनाहार
(१७)	लघुता
(१८)	ललाट
(१९)	कुलिन
(२०)	मोहनीय

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	विनय
(२)	ज
(३)	स्पर्शना
(४)	बाल साधु को
(५)	युकाशय्यातर
(६)	मृत्यु / मरण
(७)	शालीभद्र
(८)	अज्ञान दशा
(९)	ज्ञान मार्गणा
(१०)	सिद्धार्थ
(११)	परिपक्व
(१२)	तीन अहोरात्रि
(१३)	मृगावतीजी
(१४)	साधु दारा
(१५)	नवकार महामंत्र

(५)	श्वासोश्वास
(६)	वर्ष
(७)	भुजपरिसर्प
(८)	आज्ञादिजीये
(९)	संक्षेप
(१०)	च्यवते है
(११)	अतिचार / दोष
(१२)	आकाश
(१३)	हाथ की
(१४)	तत्व
(१५)	अनुक्रम से
(१६)	लोक के
(१७)	विकलेन्द्रिय
(१८)	क्रिये हों
(१९)	ज्ञान
(२०)	व्यतीत हुआ

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	श्रामण्य श्रमण संबंधी
(२)	स्पर्शना
(३)	अपेक्षा से
(४)	सम्यकत्व

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	७
(२)	८	(७)	२
(३)	१०	(८)	४
(४)	९	(९)	३
(५)	१	(१०)	५

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	३
(२)	३३
(३)	४९
(४)	६३
(५)	१२ वर्ष
(६)	१०
(७)	२५
(८)	९
(९)	७वा (सातवा)
(१०)	८

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	✓	(१)	१२
(२)	×	(२)	३
(३)	×	(३)	१४
(४)	×	(४)	७
(५)	✓	(५)	२५
(६)	×	(६)	१६
(७)	✓	(७)	१५
(८)	×	(८)	८
(९)	✓	(९)	१८
(१०)	✓	(१०)	६

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. सम्यक ज्ञान-दर्शन सभी गुणों का मूल है विनय। नवकार महामंत्र जो जैनो की पहचान है, उसमे प्रथम शब्द में झुकने की बात समझाता है। घर में माता-पिता का, पाठशाला, स्कूल कॉलेजों मे गुरुजनों का, व्यवहार में हित-शिक्षा देने वालों का विनय, और देरासर में भगवान का, उपाश्रय में गुरु भगवंतो का विनय हमे अवश्य करना चाहीये। दृष्टांत दिये जाय तो सम्राट श्रेणिक महाराजा और चंडाल के विद्याग्रहण, सौधर्मेंद्र का वृषभ रूप धारण करना। मृगावती साध्वी का चंदनबाला के प्रति विनय यह सब दृष्टांत है।

२. चौदह मार्गणाओं के बासठ भेदो मे यह पता चलता है की इनमे चार मार्गणा ऐसी है जिसमे मोक्ष संभव नही, वो है योग मार्गणा - आत्मा अयोगी है इसलिये इसमें मोक्ष होता ही नही। वेद मार्गणा - इसमे मोक्ष नही कारण आत्मा अवेदी है। कषाय मार्गणा - इसमे आत्मा अकषायी है इसलिये आत्मा होता ही नही. लेश्या मार्गणा - आत्मा अलेशी होने के कारण इस मार्गणा में मोक्ष है ही नही।

३. सुगुरु वांदणा सूत्र में "अहो कायं काय" इन शब्दो की विधी ऐसे बोली जाती है. अ - मुहपत्ती जो स्थापित कि होती है उसे दोनो हाथों से स्पर्श करके बोला जाता है. हो - ललाट को दो हाथों से स्पर्श करके बोला जाता है। का - मुहपत्ती को दो हाथों से स्पर्श करके बोला जाता है। यं - ललाट को दो हाथों से स्पर्श करके बोला जाता है। का - मुहपत्ती को दो हाथों से स्पर्श करके बोला जाता है। य - ललाट को दो हाथों से स्पर्श करके बोला जाता है।

४. प्रभु महावीर ने यक्षमंदिर मे लोगों के मना करने के बावजूद चातुर्मास किया। प्रभु को डराने के लिये शूलपाणी यक्ष ने हाथी और सर्प के रूप विकुर्वित कर असह्य उपसर्ग किये लेकिन प्रभु क्षोभ न पाये, फिर यक्ष ने प्रभु के मस्तक, कान, नाक, आँख, दांत, पीठ, नाखुन आदिमे कुस्थानो मे भी वेदना पहोचाई लेकीन प्रभु तभी भी निष्क्रीय थे। तभी सिध्दार्थ व्यंतर ने समझाने के कारण शूलपाणी ने अपने अपराध की क्षमा मांगी और प्रभुभक्ती करने लगा।

५. गर्भज मत्स्य और गर्भज उरपरिसर्प हजार योजन प्रमाण वाले होते है। गर्भज पक्षीओं का शरीर प्रमाण धनुष्य पृथक्त्व और गर्भज भुजपरिसर्प का गाऊ पृथक्त्व जानना। पृथक्त्व यानी दो से नौ यानी गर्भज मत्स्य और उरपरिसर्प हजार हजार योजन लंबे होते है. और पक्षी दो से नौ धनुष्य के जितने होते है। गर्भज भुजपरिसर्प दो से नौ गाऊ के होते है। यहाँ इस लंबाई को उत्कृष्ट समझते है।